यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2024

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 तत्व

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोट:-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

जीवधड़ा

अंक 25

प्रश्न- 1. अंकों में उत्तर दीजिए- 10

1. मतिज्ञान में तिर्यंच के भेद- .....
2. छेदोपस्थापनीय चारित्र में- .....
3. अभाषक में- .....
4. समचतुस्त्र संस्थान में .....
5. जंबू द्वीप में मनुष्य के भेद .....
6. अधोलोक में देव के भेद .....
7. उपशम समकित में नैरयिक के भेद .....
8. अन्तर्द्वीपज मनुष्य के भेद .....
9. वैक्रिय मिश्र काय योग में .....
10. रसनेन्द्रिय के अलद्धिये में .....

प्रश्न-2. नीचे लिखी संख्या किन दो बोलो में पायी जाती है? इन बोलों में किन जीवों के कितने भेद पाए जाते है। स्पष्ट करें? 10

1. 347 .....

.....

2. 193 .....

.....

3. 351 .....

.....

4. 247 .....

.....

5. 410 .....

.....

प्रश्न–3. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए– **5**

1. क्षायिक समकित में तिर्यंच का कौनसा भेद लिया गया?

.....

2. सम्यग्मिथ्या दृष्टि में 5 अनुत्तर विमान वासी देवों के भेद को क्यों छोड़ा गया ह?

.....

3. 15 कर्मभूमि के पर्याप्त मनुष्य कब अनाहारक होते है?

.....

4. कौनसे देवता एकान्त मिथ्यादृष्टि होते है?

.....

5. पर्याप्त नवग्रैवेयक के देवों में वैक्रिय मिश्रकाय योग क्यों नहीं पाया जाता है?

.....

कर्म प्रज्ञप्ति

अंक 40

प्रश्न–4. संक्षेप में उत्तर दीजिए– **10**

1. निद्रा द्विक की स्वरूप सत्ता कब तक होती है?

.....

2. मोहनीय कर्म की ध्रुवोदया प्रकृतियाँ कौनसी है?

.....

3. किसके अभाव में विहायोगति का उदय नहीं हो सकता है?

.....

4. आहारक द्विक का बंध किस गुणस्थान से प्रारम्भ होता है?

.....

5. किन कारणों से कर्मों का बंध होता है?

.....

6. गुण प्रत्यय या भव प्रत्यय से जिन प्रकृतियों का बंध नहीं होता है, उन प्रकृतियों के संक्रमण को क्या कहते है?

.....

7. कार्मण वर्गणा के पुद्गलों को आत्मा के साथ एकमेक करना क्या कहलाता है?

.....

8. किस कर्म की उद्वलना करके जीव मोहनीय कर्म की 27 प्रकृतिक सत्ता वाला हो जाता है?

.....

9. किस आयु की सत्ता वाला जीव श्रेणी आरोहण नहीं कर सकता है?

.....

10. कोई भी जीव उत्कृष्ट कितने काल तक आहारक रह सकता है?

.....

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- **10**

1. लब्धि पर्याप्त एकेन्द्रिय जीवों के ही .....नाम कर्म का उदय होता है।

2. अयशः कीर्ति का बंध .....अवस्था में ही संभव है।

3. तिर्यंच श्रावक के .....गोत्र का उदय रहता है।

4. गुणों की प्राप्ति के लिए कर्म प्रकृति की उद्वलना में .....काल लगता है।

5. सर्वोपशम सिर्फ .....कर्म का होता है।

6. उदयवलिका प्रविष्ट कर्म प्रदेशों का .....नहीं होता है।

7. औपशमिक सम्यक्त्वी जीव ही .....गुणस्थान में जाते है।

8. जिन जीवों ने आहारक चतुष्क का बंध नहीं किया है, उन जीवों के इनकी .....नहीं होती है।

9. तेजस्कायिक जीव उच्च गोत्र की .....करते है।

10. जिन प्रकृतियों का उदय होने पर बंध नहीं होता है वे .....बंधिनी प्रकृतियाँ कहलाती है।

प्रश्न-6. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए- **10**

1. नाम कर्म की ऐसी कौनसी प्रकृतियाँ है। जिनकी सत्ता सभी संसारी जीवों के रहती है?

.....

2. मोहनीय कर्म ऐसी अध्रुवबंधिनी प्रकृतियाँ है जो समक व्यवच्छिद्यमान बंधिनी प्रकृतियाँ भी है?

.....

3. मनुष्य गति के जीव किन गुणस्थानों में मनुष्य प्रायोग्य प्रकृतियों का बंध करते है?

.....

4. विग्रह गति में कार्मण काय योग के समय नाम कर्म की किन प्रकृतियों का ही उदय होता है?

.....

5. स्थावर दशक की ऐसी क्रम व्यवच्छिद्यमान प्रकृतियाँ जो स्वोदय बंधिनी भी है?

.....

6. किस जीव के तीर्थंकर नाम कर्म की सत्ता पहले गुणस्थान में होती है?

.....

7. दर्शन मोहनीय के सर्वोपशम अवस्था में कौनसे करणों की प्रवृत्ति हो सकती है?

.....

8. दूरे गुणस्थान में कौनसी प्रकृतियों की सत्ता की भजना है?

.....

9. हास्य षट्क की सत्ता क्षय के बाद पुरुष वेद की सत्ता का क्षय कब होता है?

.....

10. सातवें गुणस्थान में जीव किन प्रकृतियों का उदय विच्छेद करता है?

.....

प्रश्न–7. निम्न प्रश्नों का उत्तर विस्तार से लिखे– **10**

1. 13वें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की सत्ता की नियमा और भजना है? 13वें गुणस्थान के अंतिम समय में कितनी प्रकृतियों का उदय विच्छेद होता है? प्रकृतियाँ लिखे?

.....

.....

2. प्रदेश संक्रमण और स्तिबुक संक्रमण में क्या भिन्नताएँ है? स्पष्ट करें?

.....

.....

3. ध्रुव बंधिनी प्रकृतियों में जो प्रकृतियाँ ध्रुवोदया नहीं है उनका बंध विच्छेद कौनसे गुणस्थान में होता है?

.....

.....

4. 14वें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की सत्ता स्तिबुक संक्रमण के द्वारा क्षय होती है? प्रकृतियाँ लिखे?

.....

.....

5. उत्क्रम व्यच्छिद्यमान बंधोदया प्रकृतियाँ कौनसी है? उनमें से कौनसी प्रकृतियाँ स्वानुदय बंधिनी है?

.....

.....

जीव पर्याय **अंक 35**

प्रश्न-8. सही विकल्प चुनिये- **10**

1. जघन्य गुण लाल वर्ण उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य ऐसे ही दूसरे मनुष्स से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान पतित हो सकता है?

अ. तुल्य ब. चतुःस्थान स. एक स्थान द. त्रिस्थान

2. उत्कृष्ट आमिनिबोधिक ज्ञान वाला द्वीन्द्रिय ऐसे ही दूसरे द्वीन्द्रिय से आभिनिबोधिक ज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा क्या है?

अ. षट्स्थान ब. त्रिस्थान स. तुल्य द. इनमें से कोई नही

3. जघन्य अवधि दर्शन वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधि दर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से अवगाहना की अपेक्षा कितने स्थान पतित हो सकता है?

अ. षट्स्थान ब. द्विस्थान स. चतुःस्थान द. त्रिस्थान

4. उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यंच स्थलचर में कितने उपयोग पाए जा सकते है?

अ. 4 ब. 6 स. 9 द. 5

5. जघन्य अवगाहना वाला महाविदेह क्षेत्र का मनुष्स ज. अवगाहना वाले महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक हो सकता है?

अ. चतुःस्थान ब. एक स्थान स. त्रिस्थान द. तुल्य

6. जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऐसे ही दूसरे तिर्यंच पंचेन्द्रिय से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक हो सकता है?

अ. त्रिस्थान ब. चतुःस्थान स. एक स्थान द. तुल्य

7. मध्यम अवगाहना वाला वायुकायिक जीव में तिने उपयोग पाए जाते है?

अ. 3 ब. 5 स. 6 द. 4

8. जीव पर्याय में नैरयिक और भवनपति देवों के कुल कितने आलापक है?

अ. 93 ब. 1023 स. 930 द. 1032

9. एक केवली ज्ञानी मनुष्य 84 लाख पूर्व की स्थिति वाले है और दूसरे केवलज्ञानी मनुष्य की स्थिति एक लाख पूर्व की है–ये स्थिति की अपेक्षा कौनसा स्थान हीनाधिक है?

अ. संख्यातवां भाग ब. असंख्यातवां भाग स. संख्यात गुणा द. असंख्यात गुणा

10. एक पृथ्वीकायिक जीव की स्थिति 22000 वर्ष की है और दूसरे की 22000 वर्ष में 10 समय कम की है–ये कौनसा स्थान हीनाधिक होगा?

अ. असंख्यात वां भाग ब. संख्यातवां भाग स. संख्यात गुणा द. इनमें से कोई नही।

प्रश्न–9. सही/ गलत बताएं– 10

1. उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य में उत्कृष्ट अवधिज्ञान और अवधिदर्शन पाया जाता है। ( )

2. वर्णादि 20 बोल में प्रत्येक बोल की पर्याय अनंत होती है। ( )

3. उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अवधिज्ञान और विभंग ज्ञान नहीं होता है। ( )

4. एक अप्पकायिक जीव दूसरे अप्पकायिक जीव से अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थान पतित हो सकता है। ( )

5. त्रीन्द्रिय में जघन्य अवगाहना में चक्षुदर्शन संभव है। ( )

6. मध्यम अवधिज्ञानी मनुष्य की अवगाहना चतु:स्थान पतित होती है। ( )

7. जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले वाणव्यन्तर देव में उत्कृष्ट विभंग ज्ञान हो सकता है। ( )

8. उत्कृष्ट गुण लाल वर्ण वाले चतुरिन्द्रिय में ज्ञान अज्ञान पाया जा सकता है। ( )

9. अवगाहना हमेशा वर्तमान कालिक होती है जबकि स्थिति पूरे जीवनकाल की होती है। ( )

10. सम्यग्दृष्टि जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करता है। ( )

प्रश्न–10. निम्न का उत्तर एक शब्द में दीजिए– 7

1. जघन्य अवगाहना वाला नैरयिक ज. अवगाहना वाले नैरयिक से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक हो सकता है? .....

2. जघन्य गुण सुरभि गंध वाला पुष्प ऐसे ही दूसरे पुष्प से शेष वर्णादि के बोलों की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक हो सकता है? .....

3. एक सूर्य देव की स्थिति एक पल्योपम की है दूसरे सूर्य देव की स्थिति एक पल्योपम 25 हजार वर्ष की है, ये कौनसा स्थान हीनाधिक है? .....

4. 5 अनुत्तर विमान वासी देव स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक होते है? .....

5. केवली भगवान के आत्म प्रदेश और लोकाकाश के प्रदेश कितने है? .....

6. ज. चक्षुदर्शन वाले वैमानिक देव की स्थिति कितने स्थान पतित हो सकती है? .....

7. उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने ज्ञान पाए जा सकते है? .....

प्रश्न–11. निम्नलिखित प्रश्नों को स्पष्ट करें– **8**

1. उत्कृष्ट अवगाहना वाला नैरयिक उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिक से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक होता है? वे स्थान कौनसे है? कारण स्पष्ट करें?

.....

.....

2. उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य और उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने उपयोग पाए जाते है? कौन–कौन से? कारण बताएँ?

.....

.....

3. जघन्य स्थिति वाले द्वीन्द्रिय में तीन उपयोग पाए जाते है और जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय में पांच उपयोग पाए जाते है–स्पष्ट करें?

.....

.....

4. मध्यम मनःपर्यायज्ञानी और मध्यम अवधिज्ञानी मनुष्य अवगाहना की अपेक्षा कितने स्थान पतित होते है? कारण बताए?

.....

.....